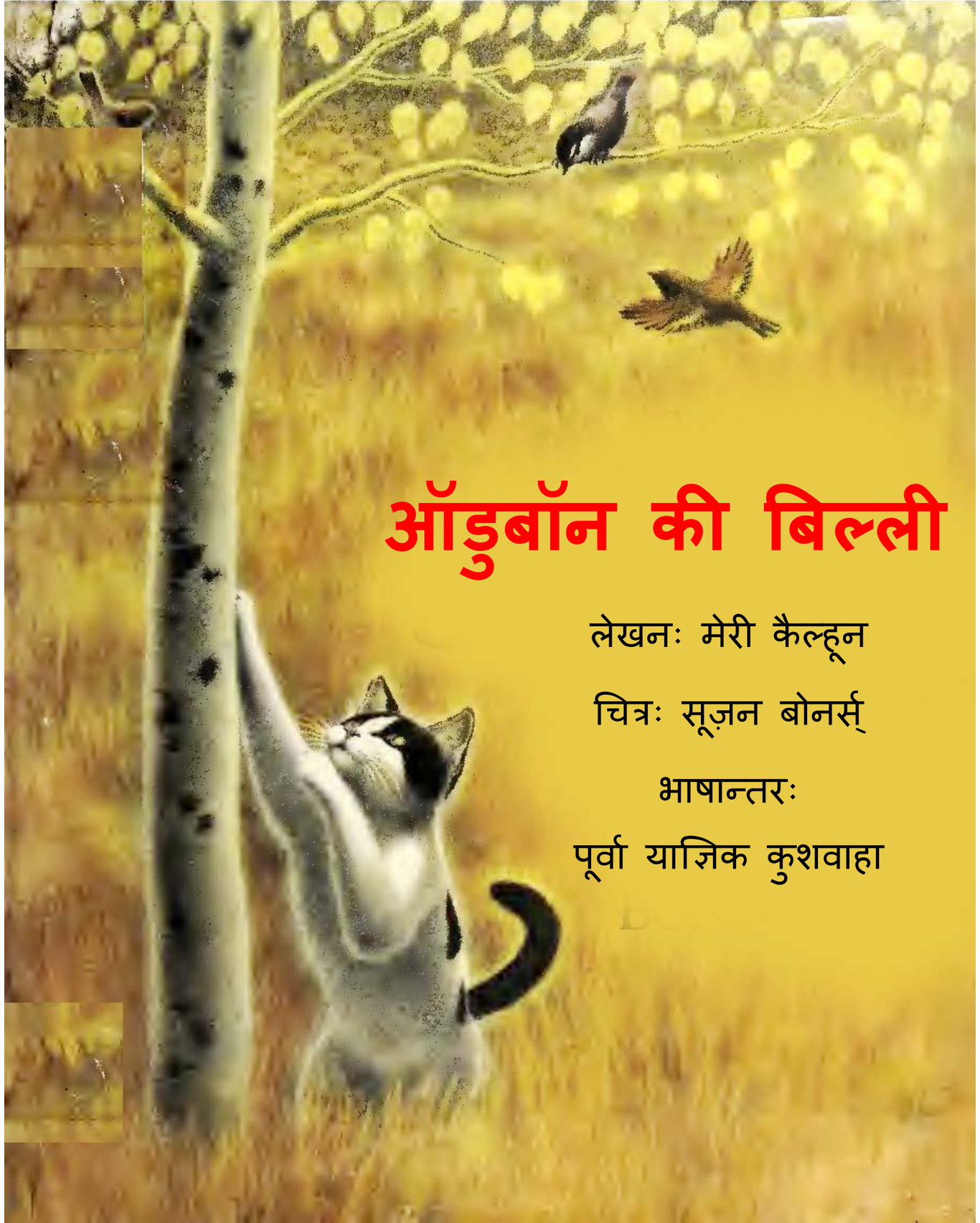

ऑडुबॉन की बिल्ली

लेखनः मेरी कैल्हून

चित्रः सूज़न बोनर्स्

भाषान्तरः

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सभी उम्र के बिल्ली प्रेमी इस रोचक सचित्र कथा को रुचि से पढ़ेंगे, जो एक ऑडुबॉन बिल्ली हिल्डा की चुनौतियों और परेशानियों का बयान करती है।

हिल्डा को अपना उप या डाक नाम पाखियों को देखने-निहारने के शौक के कारण मिला है। वैसे उसे शिकारी हिल्डा का नाम भी पसन्द आता, पर उसे उड़ने वाले जीवों को, जो उसे इस कदर मोहते हैं, पकड़ने और क़रीब से जाँचने का मौका बिरले ही मिल पाता है। पर यह सुअवसर उसे तब मिलता है जब उसके लोग दो दिन के लिए उसे अकेला छोड़ते हैं। फिर भी पंछियों को धर-पकड़ने का काम उन्हें निहारने से कहीं कठिन सिद्ध होता है, और हिल्डा को ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनकी उसने उम्मीद ही नहीं की थी। एक विशाल सींगदार उल्लू और बड़ा-सा जंगली चूहा, हिल्डा को यह भरोसा दिला देते हैं कि उसे कम उत्तेजक ऑडुबॉन स्वीकृत बिल्ली आहार से ही संतोष करना होगा।

रॉकीस की पृष्ठभूमि में स्थित यह कहानी लेखिका के परिहास और जीव-जन्तुओं के प्रति उनके प्यार से दमकती है। इसके सुन्दर चित्र पश्चिमी पतझड़ के मौसम और हमारी बिलौटी नायिका के आकर्षण को बखूबी कैद करते हैं।

ऑडुबॉन की बिल्ली

लेखनः मेरी कैल्हून

चित्रः सूज़न बोनर्स्

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लिऑन, एल्क रिज के पक्षी-पुरुष के लिए

हिल्डा भूखी थी। अव्वल तो अपने बिलौटी आहार (कैट फूड) के लिए। और तब शायद गिलहरी के लिए। पर ख़ास तौर से किसी परिन्दे के लिए।

उसके घर वाले पिट्ठी झोले लाद घूमने गए थे। और उसे पहाड़ में स्थित घर में अकेला छोड़ गए थे।

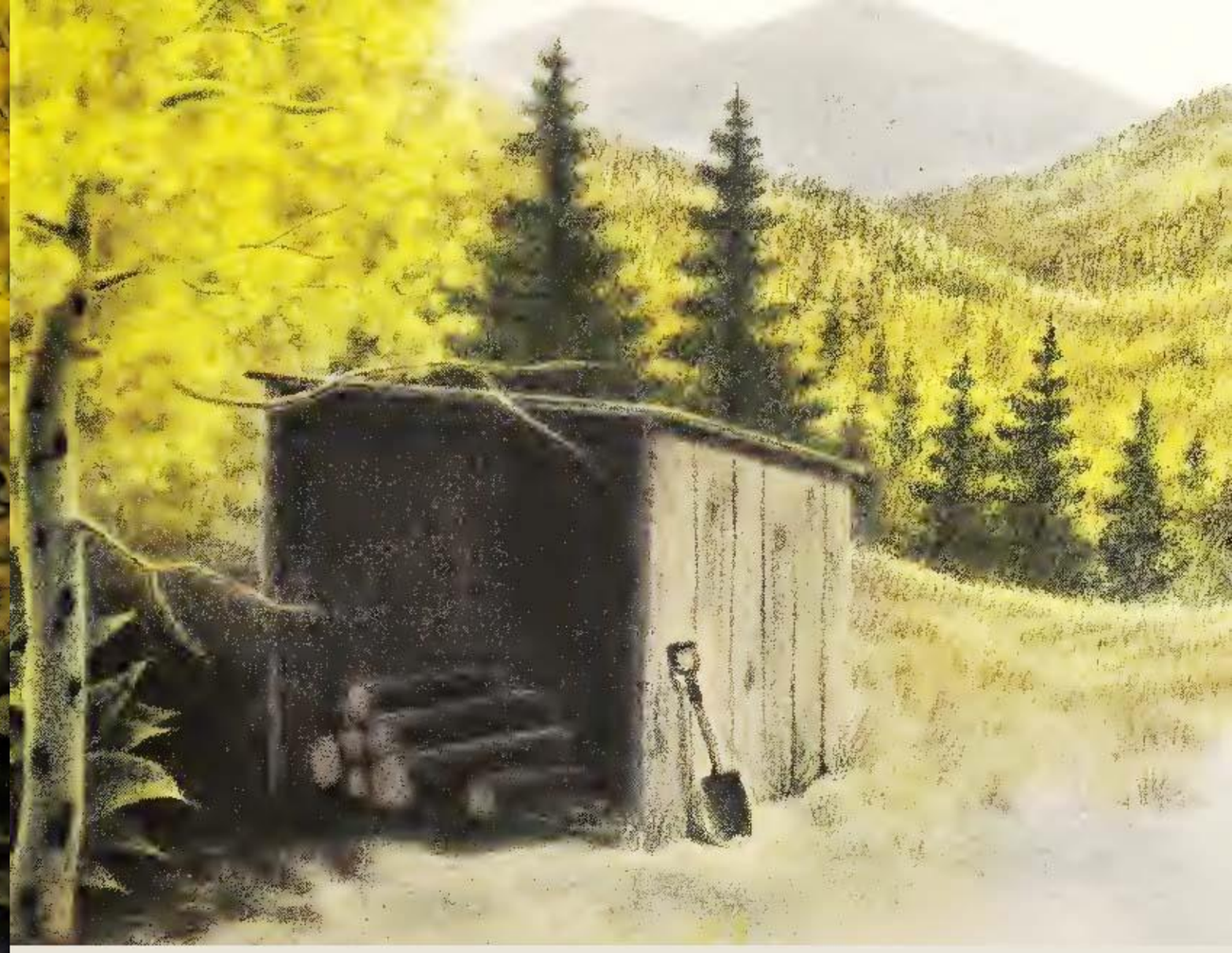

"तो ठीक है हिल्डा, तुम इस जगह के लिए पूरी तरह ज़िम्मदार हो," लड़की ने बरामदे में रखे बड़े से बर्तन में सूखा कैट फूड और दूसरे में पानी रखते कहा।

तब लड़की और उसके माता-पिता, अपने ऑडुबॉन सोसायटी के दोस्तों के साथ पतझड़ के रंगों और पाखियों को देखने निकल गए थे।

"अच्छी बनना ऑडुबॉन बिल्ली!"

लड़की उसे ऑडुबॉन बिल्ली इसलिए बुलाती थी क्योंकि हिल्डा पूरी तरह समर्पित पाखी निहारने वाली बिल्ली थी। वह घंटों बरामदे की सीढ़ियों के नीचे दुबकी बैठी रहती, इस उम्मीद में कि कोई परिन्दा पास से उड़ता आएगा। उसके पास दूरबीन तो थी नहीं, सो वह पाखियों को पास से निहारने के लिए पेड़ों पर चढ़ती। बसन्त में उसने पीली फुदकी के घोंसले का बारीकी से अध्ययन किया था, जब तक लड़की ने एक अखबार को लपेट कर बनाए डंडे से उसे ऐसा करने से बरज न दिया था।

हिल्डा सिर्फ़ साल भर की ही थी, पर उसने कई तरह के पाखियों की पहचान करना सीख लिया था। पिछली गर्मियों के गुंजन पाखी (हमिंग बर्ड), उड़ती सूईयों से थे। उनकी लम्बी पैनी चोंच थी और वे हवा में इस तेज़ी से सनसनाती उड़ती थीं कि उन्हें पकड़ा ही नहीं जा सकता था। काली-सफ़ेद चिकैडी छोटी थी और पकड़े जाने लायक थी, खासकर इसलिए क्योंकि वे इतनी सारी थीं। और बड़ी स्टैलर जे (नीले-काले शानदार छोटे परिन्दे) जंगल के दबंग लुटेरे थे। उन्हें पकड़ पाना हिल्डा के लिए सचमें एक बड़ी उपलब्धि होती।

आज पहली बार उस जगह की पूरी ज़िम्मेदारी हिल्डा पर थी। सो वह अपने इलाके की गश्त पर निकल पड़ी, जंगल के बीच, मैदानों के पार। "मैं ज़िम्मेदार हूँ, मैं ही ज़िम्मदार हूँ।" पतझड़ की लम्बी घास के बीच से हिल्डा अपनी पूँछ डुलाती बढ़ी।

घूम-घाम कर जब वह देर-दोपहर वापस लौटी, उसका खाना ग़ायब था। गिलहरियाँ और एक मोटा चूहा उसके सूखे आहार का एक-एक टुकड़ा उठा ले गए थे।

हिल्डा के खाली कटोरे में वह मुश्टंडा चूहा दुबका था। वह इतना बड़ा था और इतने डरावने तरीके से अपनी झबरी पूँछ हिला रहा था कि हिल्डा दूसरी ओर की सबसे छोटी गिलहरी के पीछे दौड़ी, जो उसके खाने का आख़िरी टुकड़ा ले जा रही थी। पर वह चोरनी पत्थरों की एक बड़ी-सी ढ़ेरी के पीछे जा छुपी।

"मियर-राउल!" हिल्डा गुर्राई।

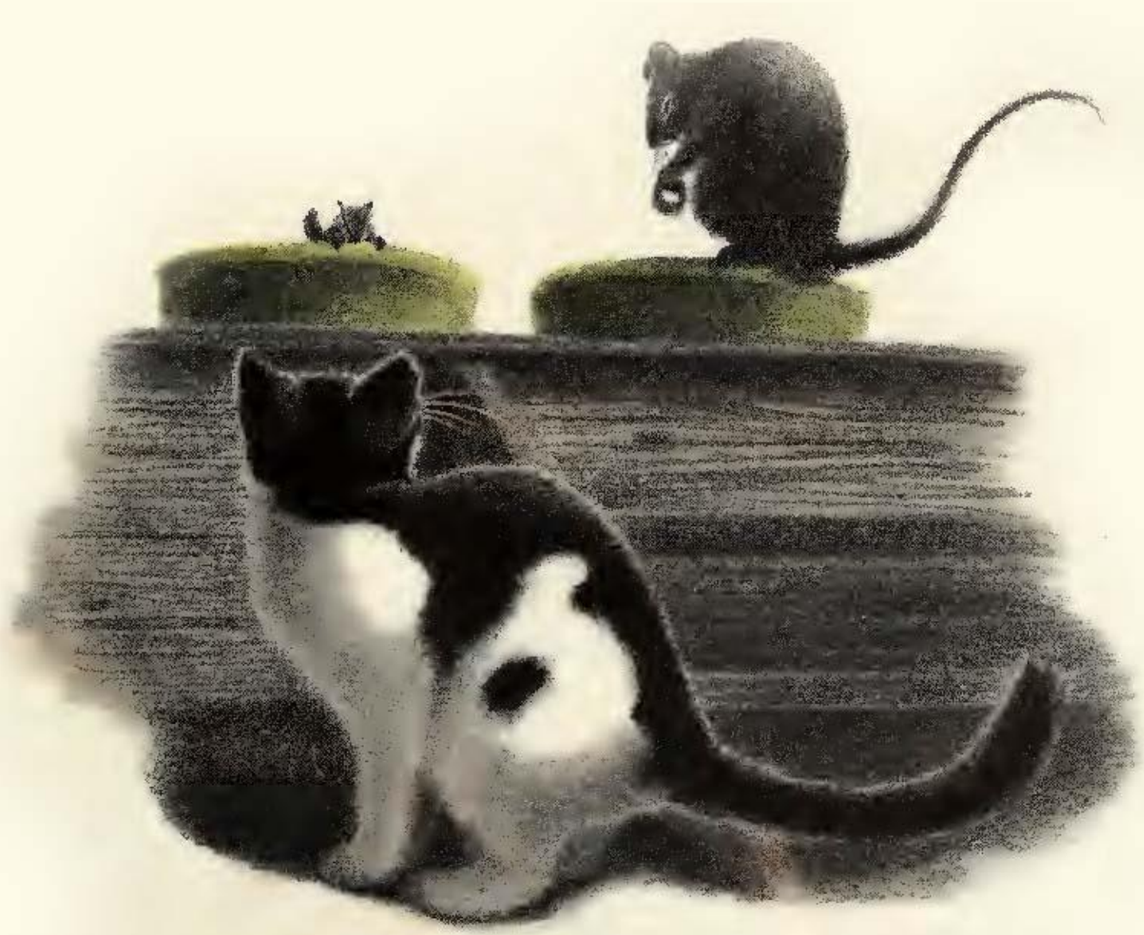

वह भूखी थी। पिछली रात से उसने कुछ खाया न था। और लड़की अभी एक और दिन घर लौटने वाली नहीं थी। कैट फूड से ठंसी गिलहरी खाने मे ज़रूर लज़ीज़ होगी, हिल्डा ने तय किया।

घर के सामने, दो एस्पन पेड़ों के बीच चिड़ियों के चुग्गे वाला उपकरण टंगा था। उसके ठीक नीचे पिछली सर्दियों में परिन्दों द्वारा बिखेरे गए बीजों से सूरजमुखी का जंगल उग आया था। हिल्डा ने एक गिलहरी को डंठल पर फुदक सूरजमुखी के फूल पर चढ़ते देखा। गिलहरी ने फूल के बीज उखाड़े, उन्हें फोड़ा, बीज खाया और छिलकों को नीचे गिराया।

हिल्डा की हरी आँखें सिकुड़ीं, उसने अपनी पूँछ का सिरा फटकारा। हिल्डा, खूँखार हत्यारन, सूरजमुखी के झुंड के बीच से गुज़रती, छिलकों की बरसात की ओर बढ़ चली। तब उछली और सूरजमुखी के मोटे डंठल से टकराई।

गिलहरी की छलाँग गोलाकार थी, हिल्डा उसके पीछे उछली ज़रूर पर गिलहरी तेज़ी से पत्थरों की ढ़ेरी के नीचे जा दुबकी। हिल्डा ने अपने पंजों से पत्थरों के नीचे खोदा। पर कुछ भी मुलायम और कुलबुलाता उसके हाथ न लगा।

गिलहरियाँ इतनी तेज़ हैं कि उन्हें पकड़ा नहीं जा सकता पाखी ही बेहतर हैं, उसने तय किया। वैसे भी उसे बिलकुल प्राकृतिक भोजन ही खाना चाहिए, और कैट फूड से ठंसी गिलहरी भला प्राकृतिक कहाँ रह गई थी।

उम्र में छोटी होने के कारण हिल्डा ने अब तक केवल कुछ ही सुस्त पाखी पकड़े थे। पर एक समर्पित ऑडुबॉन बिल्ली होने के नाते उसे एक साधारण पाखी पकड़ने के क़ाबिल तो होना ही चाहिए। ख़ासकर तब, जब उसका पेट भूख से खोखला हो चुका था। और फिर लड़की भी नहीं थी जो उसे पक्षी प्रजातियों को खतरे में न डालने का उपदेश देती।

पाखियों को दाना खिलाने के उपकरण के पास कई तरह के पाखी थे। पहाड़ी चिकैडी, छोटी लाल फिंच और देवदार सिस्किन भी। हिल्डा एस्पन के पेड़ पर चढ़ी और उसका पूरा शरीर मानों पेड़ के रंग में घुलमिल गया। क्योंकि पेड़ की छाल हल्के रंग की थी और उस पर हिल्डा की आँखों जैसे हरे धब्बे थे।

पर जैसे ही हिल्डा पेड़ पर चढ़ी सारे पाखी फुर्रर्र से उड़ गए। पर हिल्डा ने अपने पंजे तने पर गाड़ लिए और सुनहरे पत्तों के बीच छिप कर इन्तज़ार करने लगी। पहले एक चिकैडी वापस लौटी, तब धीमे-धीमे दूसरे परिन्दे भी। शिकारी हिल्डा किसी पाखी के क़रीब आने की राह तकने लगी। न उसकी पूँछ फड़की, न मूँछ का एक बाल तक।

फिर भी अचानक ख़तरे की घंटी बज उठी जंगली चैरी की झाड़ पर बैठी एक गिलहरी ने अपनी पूँछ झटकते हुए सबको चेतावनी जो दे दी, "टिक-टिक-टिक-टिक!"

"सिक-अ-डीडी," पेड़ पर ऊपर बैठी चिकैडी ने मखौल उड़ाया।

"मियाऊँ, मियर-राउल!" हिल्डा तल्ख़ी से भरी तने से नीचे सरकी। आख़िर यह उसका इलाका था। और फिलहाल वह उसके, यानी हिल्डा की निगहबानी के तहत था।

वह क्या था जो लम्बी घास के बीच से बढ़ा चला आ रहा था? दो मोटे-ताज़े तीतर। उसके लोग घर लौटें तब तक उसका पेट भरने के लिए एक ही तीतर काफ़ी था। शिकारी हिल्डा घात लगा, पेट के बल रेंग कर आगे बढ़ने लगी।

झप्प-झड़प!

दोनों तीतरों ने अपने पंख फड़फड़ाए और उड़ कर देवदार की ऊपरी शाखाओं पर जा बैठे। हिल्डा ललचाई नज़रों से उन्हें ताकती रही। वे भी जिज्ञासा से भर उसे घूरने लगे।

"म्याऊँ!" हिल्डा कुंठा से भर, पूँछ फटकारते हुए देवदार का चक्कर लगाने लगी।

तीतर अपनी गर्दन घुमा हिल्डा को पेड़ का चक्कर काटते देख रहे थे।

“मियाऊँ मियर-राउल!” हिल्डा देवदार के गिर्द घूमती गई।

एक तीतर मुग्ध हो उसे देखते-देखते अपनी शाखा पर डगमगाया। और लुढ़का। और हिल्डा पर जा गिरी, धप्प!

हिल्डा चैंक कर दौड़ पड़ी। जब वह वापस लौटी दोनों तीतर जा चुके थे।

धत्त! हिल्डा फुफकारी। अपनी डरपोकी से वह खुद पर ही खीझ कर गुर्राई ओर उसका खाली पेट गुड़गुड़ा उठा

सूरज डूब चुका था; दिन अब धुंधला रहा था। परिन्दों को खाना देने वाले उपकरण के नीचे एक जे पाखी और कुछ गिलहरियाँ बीज चुग रहे थे। वे बड़े धीमे-धीमे बरामदे की ओर बढ़ रहे थे। हिल्डा सीढ़ियों के नीचे सरक गई। किसी गलिहरी ने वहाँ सर्दियों के लिए पीले देवदार के शंकुओं की एक ढ़ेरी बना रखी थी। हिल्डा उसके पास ही दुबक गई।

हिल्डा बड़े धीरज से पाखियों को घूर रही थी। वे सीढ़ियों के पास ... और पास ... और, और पास बढ़े आ रहे थे। हिल्डा ने झटके के साथ अपनी पंजा आगे बढ़ाया।

पर चिड़िया ने अपनी पैनी चोंच उसके पंजे पर दे मारी। "अर्रर्र!"

हिल्डा पलट कर उसकी ओर लपकी। पंजा बढ़ाया - लो अब तो पकड़ ही लिया! पर नहीं, उसकी गिरफ्त में केवल उसकी पूँछ के दो पंख ही आए थे।

वह चिड़ियाओं को खिलाने वाले उपकरण के ऊपर जा उड़ी। "जे,जे!" वह चिंचियाई।

नीले जे पाखी ने संतुलन बनाने के लिए अपने पंख फैलाए क्योंकि उसकी पूँछ ठीक से काम नहीं कर रही थी।

हिल्डा लपकते हुए पेड़ के तने पर चढ़ी। उसका पंजा अब भी दर्द से कुनकुना रहा था। वह ज़रूर इस गुस्ताख़ जे पाखी को पकड़ लेगी और सबक सिखाएगी, बतला देगी कि इलाके का पहरेदार कौन है। काश वह उड़ सकती। शाखा पर फुर्ती से बढ़ सकती, और

झप्प-झपाट! यह क्या! हिल्डा उड़ रही थी! पर जे पाखी से उलटी दिशा में।

नुकीले पंजे उसे अगल-बगल से दबोचे हुए थे। उसे एक उल्लू ने जकड़ रखा था।

हिल्डा एक सींगदार उल्लू के चंगुल में थी जो देवदार के पेड़ के ऊपर से उड़ा जा रहा था। हिल्डा को उसकी क्रूर बाँकी चोंच दिख रही थी।

कितना शर्मनाक था एक चिड़िया द्वारा खा लिया जाना!

“मियाऊँ मियर-राउल!” हिल्डा गुस्से से चीखी।

उल्लू चौंका और उसकी गिरफ्त कुछ ढ़ीली हुई। हिल्डा ने अपनी पूँछ फटकारी ओर गिरफ्त में छटपटाई। उल्लू के चुंगल से निकल हिल्डा देवदार की एक शाख पर गिरी। "अरेरेरे!" तब वह दूसरी शाख से नीचे सरकी, "मियर-राउल!" वह हड़बड़ाती हुई पेड़ से नीचे उतरी।

उल्लू फिर से झपटता आया, हिल्डा लपक कर एक छपरिया के नीचे जा छिपी।

शर्मसार हिल्डा, भूखी हिल्डा। उसने एक गहरी साँस ली। सूँउऊँ! कितनी भयंकर बू थी!

लकड़ी के ढ़ेर के पास एक फूहड़ सा घरौंदा था, जंगली चूहे का बसेरा। वह खरपतवार, सड़ती पत्तियों, चिड़िया की हड्डियों और पशु मल से बना था। उसमें एक स्क्रू-ड्राइवर भी था। बदबूदार घरौंदा, बदसूरत घरौंदा, एक खलनायक का घरौंदा!

घरौंदे के पास ही सूखे बिलौटी आहार की एक ढ़ेरी थी।

अचानक जंगली चूहा लौट आया, वह देवदार की एक टहनी घसीट रहा था। जब उसने हिल्डा को देखा, वह छपरे के बाहर ही रुक गया। टहनी परे पटक उसने अपने दाँत दिखाए, किसी शूरवीर योद्धा की तरह। ज़्यादातर बिल्लियाँ जंगली चूहों का सामना नहीं कर पातीं।

पर मैं ही तो यहाँ की ज़िम्मेदार हूँ, हिल्डा ने सोचा।

वह थर्राई, उसने अपना शरीर ताना। वह पूरी ताकत से जी-जान लड़ा देगी। यह तय कर, वह चूहे पर उछली।

उसी पल, विशाल सींगदार उल्लू धुंधलके में, पंखों की आवाज़ किए बिना झपटा।

उसकी मज़बूत चोंच ने ज़ोरदार टूंगा मारा, और ज़बरदस्त पंजों ने झपट्टा - जंगली चूहा गायब हो गया। उल्लू अपने शिकार के साथ उड़ चला था।

हिस्स्स्स! हिल्डा फुफकारी, कुछ दुबकी, और चैकन्नी नज़रों से देखने लगी। खैरियत, वह ठीक थी।

वह शिकारी हिल्डा भला तब कैसे बन सकती है जब कमान उसके हाथ में हो ही नहीं, और छीन-झपट लेने वाली चिड़िया आस-पास हो? फिर भी उसने उस दिन पाखियों को निहारने का बेहतरीन काम किया था। इसमें कोई शक नहीं कि वह, हिल्डा, एक उम्दा पाखी-दर्शक तो थी। तब हिल्डा ने चैन से, चूहे के घरौंदे के पास इकट्ठा मछली की खुशबू वाला, ऑडुबॉन-अनुमोदित सूखा बिल्ली आहार खाया।